Shodh ManthanVol. XVII Special Issue Jan.2026 ISSN: (P)0976-5255(e)2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17SI01.05

रामायणकालीन संगीत में वाद्यों का चिंतन

डॉ. दीपक त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक (संगीत विभाग)
साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद
ईमेलः deep.naadbramha333@gmail.com

05

सारांश

रामायण कालीन संस्कृति बहुत ही उन्नत और समृद्धशाली रही है क्योंकि हजारों साल पूर्व में जो समाज की कल्पना की गई उसकी छाप आज के भी समाज में देखने की कोशिश की जा रही है इसीलिए समाज की जो तस्वीर खींची जाती है उसकी तुलना रामायणकालीन रामराज से की की जाती है। किसी भी संस्कृति की ओजस्विता उसकी कलाओं पर निर्भर करती है, उसमें भी संगीत एवं साहित्य का प्रभाव अधिक पाया जाता है रामायण काल में संगीत बहुत ही व्यापक विस्तार लिए हुए था। समाज में उसकी अपनी एक महती भूमिका थी यही कारण है कि रामायण कालीन संगीत बहुत ही उच्च कोटि का प्राप्त होता है। आदिकवि बाल्मीकी द्वारा रचित रामायण भारत का प्राचीन सांस्कृतिक महाकाव्य है। इसकी सलिल धार आज तक भी जनमानस को परिप्लावित करती आ रही है। मानव जीवन के हर पहलू को दिशा देने वाली यह अमर गाथा भारतीय सनातन संस्कृति की अमूल थाती है और रहेगी। रामायण में गान्धर्व के साथ ही गंधर्व एवं अप्सराओं का अनेक बार उल्लेख हुआ है। गन्धर्व विशेषतः गान तथा वीणा वादन किया करते थे। रामायण में स्वर, राग आदि की जितनी जानकारी मिलती है उतनी ही ताल वाद्यों की भी विशद चर्चा की गई है। इस का प्रथम प्रमाण रामचन्द्र जी की जन्म समारोह में बजने वाली दुंदुभियों के वादन से भी ज्ञात होता है। रावण के राजदरबार में प्रवेश के दौरान ढोल, नगाड़े तुरही, आडंबर आदि का वादन यह दर्शाता है जो रामायण में वाद्यों की सशक्त परंपरा के संवहन एवं उनकी उपयोगिता का चिंतन प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द

रामायणकालीन संगीत, वाद्य।

मानवीय मूल्यो के निर्धारण के लिए समाजशास्त्री समय–समय पर विभिन्न विधियों को अपनाते है। जिसमें एक पक्ष संगीत भी है, संगीत मानव मूल्य को निर्धारित करने का सबसे प्रभावी तरीका है। मनुष्य अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति तभी कर सकता है जब वह मानसिक रूप से स्वस्थ हो, और मानव मस्तिष्क को स्वस्थ्ता प्रदान करता है संगीत, क्योकि संगीत एक नाद विज्ञान है। जब नाद की गूँज हमारे आन्तरिक शरीर में फैलती है तो वह निष्क्रिय पड़े सभी शारीरिक अंगों को कंपित करती है जिससे सभी क्षुब्धित नसे सक्रिय हो जाती है उनमें रक्त का संचरण होने लगता है। यही कारण है कि मनुष्य संगीत की साधना से अपनी आन्तरिक शक्तियों को जाग्रत कर परमानंद की प्राप्ति कर लेता है। भगवान राम भी जब गुरूकुल में शिक्षा ग्रहण करते थे तब ऋषि वशिष्ठ की आज्ञा से माता अरूंधती सायंकाल में विद्यार्थियो को संगीत की शिक्षा देती थी। उनका तर्क था कि दिनभर की सामाजिक, राजनीतिक आदि शिक्षा से इन कपोल कल्पित बालको के हृदय पाषाण न हो जाये, और भविष्य में मानव मूल्य से हटकर सामाजिक कार्य न करने लगे। इसलिए संगीत के पोषण से इनके हृदय को अभिसिंचित करना अति आवश्यक है। अतः संगीत इस सृष्टि में ऐसी एक मात्र कला है जो मानव को मानवता का पाठ सिखाती है। बालक राम को भगवान राम बनाती है।

वाल्मीकि ने रामायण की रचना की थी। बाल्मिकी संस्कृत भाषा के सबसे पहले कभी माने जाते हैं और रामायण सबसे पहला काव्य माना जाता है। रामायण काल में संपूर्ण समाज पर संगीत की पावन एवं दिव्य आाभा छिटक रही थी। पुरुष–नारियों के जीवन, संगीत के देवीय प्रमाण सूर्य की ज्योतिर्मय रश्मियों से आलोकित हो रहे थे। पौराणिक काल से अधिक इस काल में संगीत आत्म सौंदर्य समाज पर उभर पर आया था। पौराणिक काल में जो संगीत छोटे–छोटे दादारों में विभक्त होने लगा था, वह अब इस काल में रुक गया था। समाज का नैतिक स्तर भी ऊपर उठता दिख रहा था और इस उठते हुए स्तर पर संगीत की आभा पूर्ण रूप से प्रयुक्त हो रही थी। इसलिए लोगों के जीवन पौराणिक काल से अधिक गहरे और गंभीर बनते जा रहे थे। संगीत के प्रति लोगों की रुचियों ने उनके स्वभाव को परिश्कृत बना दिया था। पारिवारिक जीवन में भी पावन प्रेम की निर्मल धारा बह रही थी। इस काल में शायद ही कोई घर शेष हो जिसमें संगीत का अस्तित्व किसी न किसी रूप में ना हो वैदिक काल की तरह इस काल में भी हर घर में प्रातः काल होते ही ईश्वर आराधना की संगीत में स्तुति प्रस्तुत हो उठती थी संगीतज्ञ की प्रतिष्ठा समाज में वही थी जो वैदिक काल में हुआ करती थी।

जन सामान्य के विवाह उत्सव पर भी नाच गाना हुआ करता था। दुंदुभी वाद्य यंत्र का प्रयोग इस युग में होने लगा था। स्वयंवर की प्रथा चल रही थी। वर वधु के चुनाव के अवसर पर संगीत का आयोजन चल करता था। युद्ध पर जब कोई जीत कर आता था तो उसे वक्त उसका स्वागत ढूंढ भी बजाकर किया जाता था। जब लक्ष्मण जी सुग्रीव के अंतर महल में प्रवेश करते हैं तो वहां भी वीणा वादन के प्रमाण मिलते हैं। रावण भी संगीत शास्त्र का प्रकांड विद्वान था उसके दरबार में नृत्य एवं गायन का आयोजन हुआ करता था। उसको स्वर का अपूर्व ज्ञान था, रावण की पत्नी मंदोदरी स्वयं संगीतज्ञा थी। मंदोदरी का संगीत ज्ञान रावण से काम नहीं माना जाता। कहा जाता है स्वर सहित वेद पाठ करने की प्रणाली का आविष्कार सबसे पहले रावण ने ही किया था। रावण संगीत का बड़ा प्रेमी और मर्मज्ञ था। रावण द्वारा रचित एक संगीत ग्रंथ रावणीयम भी उपलब्ध होता है। रावण की रानियां सभी प्रकार के वाद्य यंत्रों को बजने में निपुण थीं। रावण का राजमहल भेरी, मृदंग, शंख, मुरज तथा पटहों के घोष से व्याप्त रहता था। जब वह अपनी सभा के अधिवेशन में जाता था, तब हजारों तुरही और शंख बजाए जाते थे। विद्वान असमसील ने अपनी पुस्तक सिविलाइजेशन आप प्रवन पीरियड में लिखा है –रामायण काल में हमें जितने उत्कृष्ट एवं उत्तम संगीत की मनोरम झांकी मिलती है उतनी इससे पूर्व के कालों में नहीं मिलती। तो प्रसिद्ध विद्वान को किड़कनी ने अपने पुस्तक 'संगीत के संक्षिप्त इतिहास' में लिखा है रामायण काल में लोगों को संगीत प्रशिक्षण का अनुराग बढ़ा रहा था बच्चों में भी संगीत की प्रियता पाई जाती थी। नारियां अपने अवकाश में नृत्य सीखा करती थीं। अनेक प्रकार के नृत्य का चलन इस युग में शुरू हो गया था। मृदंग वाद्य का भी प्रचलन खूब था। रावण कुशल संगीतज्ञ होने के कारण अवश्य ही उसके राज्य में संगीत का प्रचार बहुल्यता से रहा होगा। भेरी, पटह, डिमडिम, मुद्दक, आडंबर आदि वाद्य–यंत्रों का प्रचार रामायण काल में पाया जाता है जिनका उल्लेख बाल्मीकि रामायण में आता है।

वाद्य संगीत पूर्णतया नादमय है। नादमय का आशय स्वर से नही अपितु स्वर एवं लय दोनों से है क्योंकि नाद में स्वर गुंजित है और वह गुंजायमान ध्वनि लय से आवरणित/आच्छादित है। वाद्य संगीत को शाश्वत् संगीत का प्रतीक मानना सर्वोचित है, क्योंकि इस संगीत का जो माध्यम है वह सबसे सूक्ष्म है स्वर एवं लय। ये दोनों तत्व पूर्ण हैं जो आदि से अनंत तक निरन्तर गतिशील और नियत् रहने वाले है। एक दृष्टि से हम देखें तो जो हमारी परम शक्ति एवं शक्तियाँ हैं वे भी किसी न किसी वाद्य को धारण किये हुए हैं। माँ सरस्वती वीणा धारण किये हुए हैं तो भगवान श्री गणेश मृदंग वादन करते हैं जो कि संगीत के आदि गुरू भी कहे जाते हैं। भगवान श्री कृष्ण मुरली, तो शंकर डमरू बजाते हैं। संगीत के प्रमुख प्रेरणा स्रोत भी यही हैं। अवनद्ध पर पड़ने वाले आघातों से मानव मन की क्रियाशीलता स्वतः बढ़ जाती है। यही कारण रहा कि रामायणकालीन संगीत वाद्यों का चिंतन भी उत्कृष्ट दीख पड़ता है। वाद्यों के अंतर्गत तत्, घन, अवनद्ध, सुशिर आदि वाद्यों का वर्णन किया गया है। तत् वाद्यों के अंतर्गत वीणा का वर्णन आता है। वीणा रामायण के अयोध्याकांड के 39वें सर्ग के 39वें श्लोक में, सुंदरकांड के 10वें सर्ग के 37वें और 40वें श्लोक में उल्लेखित हुई है। वीणा एक विशेष प्रकार विपंची वीणा का भी वर्णन सुन्दर कांड के दसवें सर्ग के 41 वें श्लोक में पाया जाता है। वह इस प्रकार है–

विपंचीं परिगृह्यान्या नियता नृत्यशालिनी।
निद्रावश्मनुप्राप्ता सहकान्तेव भामिनी।।

रामायण के सुंदरकाण्ड में हनुमान जी जब लंका जाकर रावण का महल देखते हैं। इस स्थल का वर्णन करते हुए महर्षि बाल्मिकी कहते है कि रावण के महल में सुंदरियां भिन्न–भिन्न वाद्यों लेकर के सोई हुई हैं। एक नर्तकी सुंदरी विपंची वीणा को साथ में लेकर के ऐसे सोई हुई है मानो कोई भामिनी अपने प्रिय के साथ सोई हो। सुशिर वाद्यों को रामायण कालीन संगीत में विशेष महत्त्व देते थे। वेणु का उल्लेख किश्किन्धा कांड के तीसवें स्वर्ग के 50 वें श्लोक में मिलता है।

वेणुस्वरव्यंजिततूर्यमिश्रः प्रत्यूशकालेशनिलसंप्रवृत्तः।
संमूर्च्छितो गह्वरगोवृषाणामन्योन्यमापूरयतीव।।

वेणु और वीणा मानवीय सभ्यता में किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है। तार और चमड़े से निर्मित वाद्य मानवीय सभ्यता के साथ सदैव से रहा है। वेणु के रामायण काल में एक से अधिक प्रकार प्रयोग में पाए जाते हैं। सुन्दर कांड में वंशज शब्द भी आया है जो कि वेणुका ही पर्याय माना जाता है। वंशी के अतिरिक्त तुरही भी एक बहुत प्राचीन फूंक वाद्य के रूप में जाना जाता है। युद्ध कांड के 42 में सर्ग के 39वें श्लोक में शंख फूंक वाद्य का वर्णन मिलता है।

अवनद्ध वाद्य इसके अंतर्गत दुंदुभी, भेरी, मृदंग, प्रणव आदि का वर्णन रामायण में मिलता है। दुंदुभी, वैदिक काल से ही प्रयोग में रहा है। यह वाद्य प्रमुखत है मंगल कार्यों में युद्ध में मंदिरों में राजप्रसाद के वितरण आदि के समय प्रयोग किया जाता रहा है। रामायण के युद्धकांड के 42 में सर्ग के 39वें श्लोक में शंख के साथ दुंदुभी,वादन का भी वर्णन आता है।

शंखदुन्दुभिनिर्घोषः सिंहनादस्तरस्विनाम।
पृथिवीं चान्तरिक्षं च सागरं चाभ्यनादयत्।।

इसी श्रृंखला में युद्ध कांड में 44 वें सर्ग के 12वें श्लोक में भेरी, मृदंग, पणव का भी वर्णन आया है। मृदंग, यह सुन्दर कांड के दसवें सर्ग में 42 वें श्लोक में और 11 वें सर्ग के छठवें श्लोक में भी प्रयुक्त किया गया है। भेरी सुन्दर कांड के दसवें सर्ग के 43वें श्लोक में वर्णन प्राप्त होता है। इसके अलावा पटह का भी सुन्दर कांड के दसवें सर्ग के 39 वें श्लोक में वर्णन मिलता है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17SI01.05

पटहं चारुसर्वांगी न्यस्य शेते शंभस्तनी।

चिरस्य रमणं लब्ध्वा परिश्वज्येव कामिनीं।।

इसी प्रकार डिम डिम सुन्दर कांड के दसवें सर्ग के 44 वें श्लोक में वर्णन प्राप्त होता है। आडंबर का उल्लेख सुन्दर कांड के दसवें सर्ग के 45 वर्ष से लोगों में प्राप्त होता है। मड्डुक, सुन्दर कांड के दसवें सर्ग के 38 वें श्लोक में एक मड्डूक नामक वाद्य का भी उल्लेख प्राप्त होता है। मूरज, मृदंग और चेलिका सुन्दर कांड के 11 वें सर्ग के छठवें श्लोक में तीनों वाद्यों को एक साथ उल्लेख किया गया है।

अतः उपर्युक्त अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि रामायण काल में संगीत की उपयुक्तता समाज में स्वीकार्य थीं। साथ ही रामायण काल में विभिन्न वाद्ययंत्रों का भी प्रयोग किया जाता था। भिन्न–भिन्न अवसरों के लिए भी विविध वाद्यों का प्रयोग किया जाता रहा हैं। जिनके उपयुक्त प्रमाण भी प्राप्त होते है।

संदर्भ

1. चौधरी, सुभद्रा, संगीत–संचयन, कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, प्रथम संस्करण–1989
2. कुमार, डॉ0 अरविन्द, भारतीय सांगीतिक जगत को तुलसीदास का योगदान, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2005
3. मराठे, मनोहर भालचन्द्र राव, ताल वाद्य शास्त्र, तृतीय संस्करण, ग्वालियर शर्मा पुस्तक सदन, म0प्र0
4. डॉ0 सक्सेना, गुलशन, संगीत संकल्प, प्रथम संस्करण, (नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स, 2013)।
5. मिश्रा डॉ0 अरूण, उत्तर भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत, कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, संस्करण द्वितीय
6. "यमन", अशोक कुमार, संगीत रत्नावली, प्रकाशक, आभिषेक पब्लिकेशन्स, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण 2008